



महिला प्रतिनिधित्व: स्थानीय राजनीति से राष्ट्रीय राजनीति तक

डॉ. अंकुर सिंह

सहायक आचार्य

श्री राम - कृष्ण महाविद्यालय, किसौली, बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश)

ई-मेल: ankurdeol1992@gmail.com

सारांश

भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के साथ-साथ समानता और प्रतिनिधित्व के सिद्धांत पर आधारित है, किंतु महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व लंबे समय तक सीमित रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य स्थानीय राजनीति से राष्ट्रीय राजनीति तक महिला प्रतिनिधित्व की स्थिति, विकास, प्रभाव तथा चुनौतियों का विश्लेषण करना है। शोध-पत्र में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है तथा द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, शोध-पत्रों एवं चुनाव संबंधी आंकड़ों का सहारा लिया गया है।

शोध-पत्र से स्पष्ट होता है कि 73वें और 74वें संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं में महिला आरक्षण लागू होने के बाद स्थानीय स्तर पर महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण को बल मिला है। इसके विपरीत, राज्य विधानसभाओं और संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व अभी भी अपेक्षाकृत कम है, जो लैंगिक असमानता को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक रूढ़िवादिता, आर्थिक निर्भरता, राजनीतिक संसाधनों की कमी, तथा पितृसत्तात्मक संरचना महिला प्रतिनिधित्व में प्रमुख बाधाएं हैं।

यह शोध-पत्र इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि महिला प्रतिनिधित्व केवल संख्यात्मक वृद्धि तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे प्रभावी और सशक्त भागीदारी में परिवर्तित करना आवश्यक है। इसके लिए शिक्षा, राजनीतिक प्रशिक्षण, सामाजिक जागरूकता तथा आरक्षण नीति का प्रभावी कार्यान्वयन महत्वपूर्ण है। महिला प्रतिनिधित्व में वृद्धि से लोकतंत्र की गुणवत्ता, नीति निर्माण की संवेदनशीलता और सामाजिक न्याय को मजबूत किया जा सकता है।

बीज शब्द: महिला प्रतिनिधित्व, पंचायती राज, महिला आरक्षण, राजनीतिक भागीदारी, महिला सशक्तिकरण, लोकतंत्र, संसद, स्थानीय शासन

प्रस्तावना

भारतीय लोकतंत्र समानता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें महिलाओं और पुरुषों को समान राजनीतिक अधिकार प्रदान किए गए हैं। भारतीय संविधान ने महिलाओं को मतदान का अधिकार, चुनाव लड़ने का अधिकार तथा सार्वजनिक पदों पर आसीन होने का अधिकार



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

प्रारंभ से ही प्रदान किया, जो भारत को कई विकसित देशों से भी आगे स्थापित करता है। इसके बावजूद, वास्तविकता यह है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी लंबे समय तक सीमित रही है। भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक संरचना, सामाजिक परंपराएं तथा महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्थिति ने उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व को प्रभावित किया है। वैदिक काल में महिलाओं को राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, किंतु मध्यकाल में उनकी स्थिति में गिरावट आई और वे सार्वजनिक जीवन से दूर हो गईं।¹

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने महिलाओं को राजनीतिक रूप से जागरूक करने और उन्हें सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, अरुणा आसफ अली और विजयलक्ष्मी पंडित जैसी महिलाओं ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई, बल्कि महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया। स्वतंत्रता के बाद भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में धीरे-धीरे वृद्धि हुई, किंतु यह वृद्धि अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच सकी।² लोकतंत्र में समान प्रतिनिधित्व का विशेष महत्व होता है, क्योंकि यह न केवल समानता के सिद्धांत को मजबूत करता है, बल्कि समाज के सभी वर्गों की आवश्यकताओं और समस्याओं को नीति निर्माण में उचित स्थान दिलाता है। यदि महिलाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं होगा, तो उनके हितों और समस्याओं का समुचित समाधान संभव नहीं हो पाएगा।³

महिला प्रतिनिधित्व लोकतंत्र की गुणवत्ता को निर्धारित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। एक सशक्त लोकतंत्र वही माना जाता है जिसमें समाज के सभी वर्गों की समान और प्रभावी भागीदारी हो। यदि आधी आबादी राजनीतिक निर्णय प्रक्रिया से बाहर रहती है, तो लोकतंत्र अधूरा माना जाएगा। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी लोकतांत्रिक संस्थाओं को अधिक प्रतिनिधित्वकारी, संवेदनशील और उत्तरदायी बनाती है। इससे शासन प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही भी बढ़ती है।⁴

नीति निर्माण में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि महिलाएं समाज के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक पहलुओं से सीधे जुड़ी होती हैं। उनके अनुभव और दृष्टिकोण नीति निर्माण को अधिक व्यावहारिक और समावेशी बनाते हैं। उदाहरण के लिए, महिला प्रतिनिधियों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, महिला सुरक्षा और बाल कल्याण जैसे क्षेत्रों में विशेष ध्यान दिया है, जिससे समाज के समग्र विकास को गति मिली है।⁵

इसके अतिरिक्त, महिला प्रतिनिधित्व सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता को स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम है। जब महिलाएं राजनीतिक सत्ता में भागीदारी करती हैं, तो इससे समाज में महिलाओं की स्थिति मजबूत होती है और लैंगिक भेदभाव को कम करने में सहायता मिलती है। यह



महिलाओं में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास करता है तथा उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है।⁶ इस प्रकार, महिला प्रतिनिधित्व केवल राजनीतिक भागीदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है।

महिला प्रतिनिधित्व का ऐतिहासिक विकास

भारतीय इतिहास में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व एक समान नहीं रहा, बल्कि समय के साथ इसमें उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है। वैदिक काल में महिलाओं को सामाजिक एवं बौद्धिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, किंतु मध्यकाल में उनकी स्थिति में गिरावट आई और वे राजनीतिक गतिविधियों से दूर हो गईं। आधुनिक काल में विशेष रूप से उन्नीसवीं सदी के सामाजिक सुधार आंदोलनों ने महिलाओं में जागरूकता उत्पन्न की, जिससे वे सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने लगीं। स्वतंत्रता आंदोलन ने महिलाओं को राजनीतिक रूप से सक्रिय करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में हजारों महिलाओं ने भाग लिया। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, एनी बेसेंट और अरुणा आसफ अली जैसी महिलाओं ने आंदोलन का नेतृत्व किया और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष किया। इस भागीदारी ने महिलाओं में राजनीतिक चेतना और नेतृत्व क्षमता का विकास किया।⁷ स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने यह सिद्ध किया कि महिलाएं राजनीतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं और राष्ट्र निर्माण में उनका योगदान अत्यंत आवश्यक है।⁸

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान ने महिलाओं को पुरुषों के समान राजनीतिक अधिकार प्रदान किए, जो महिला प्रतिनिधित्व के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम था। संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 के अंतर्गत महिलाओं को समानता का अधिकार, भेदभाव के विरुद्ध संरक्षण तथा समान अवसर का अधिकार दिया गया। इसके अतिरिक्त, महिलाओं को मतदान करने और चुनाव लड़ने का अधिकार भी प्राप्त हुआ, जिससे वे राजनीतिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन गईं। हालांकि संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद प्रारंभिक वर्षों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी सीमित रही, जिसका मुख्य कारण सामाजिक परंपराएं, शिक्षा की कमी और आर्थिक निर्भरता थी। धीरे-धीरे शिक्षा के प्रसार, सामाजिक जागरूकता और सरकारी प्रयासों के कारण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई।⁹ पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण की व्यवस्था ने भी महिला प्रतिनिधित्व को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे बड़ी संख्या में महिलाएं राजनीतिक प्रक्रिया से जुड़ीं।¹⁰

भारतीय राजनीति में कई महिला नेताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है और अपने नेतृत्व से देश की राजनीति को दिशा प्रदान की है। इनमें इंदिरा गांधी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में देश का नेतृत्व किया और अपनी निर्णायक क्षमता तथा



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

मजबूत नेतृत्व के लिए जानी गईं उनके नेतृत्व में भारत ने कई महत्वपूर्ण राजनीतिक और आर्थिक निर्णय लिए, जिससे देश की अंतरराष्ट्रीय स्थिति मजबूत हुई। इसी प्रकार, विजयलक्ष्मी पंडित ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया और वे संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। इसके अतिरिक्त, सरोजिनी नायडू स्वतंत्र भारत की पहली महिला राज्यपाल बनीं और उन्होंने महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इन महिला नेताओं के योगदान ने यह सिद्ध किया कि महिलाएं उच्च राजनीतिक पदों पर सफलतापूर्वक कार्य कर सकती हैं और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।¹¹ इन नेताओं ने न केवल महिला प्रतिनिधित्व को बढ़ावा दिया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की महिलाओं के लिए राजनीतिक क्षेत्र में नए अवसर भी प्रदान किए।

स्थानीय राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व

पंचायती राज व्यवस्था भारतीय लोकतंत्र की आधारभूत संरचना है, जिसका उद्देश्य स्थानीय स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करना और जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करना है। इसका मूल उद्देश्य सत्ता का विकेंद्रीकरण करना तथा ग्रामीण जनता को अपने विकास से संबंधित निर्णय लेने का अधिकार प्रदान करना है। भारत में पंचायती राज की अवधारणा प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है, किंतु आधुनिक स्वरूप में इसे स्वतंत्रता के बाद विकसित किया गया। बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिशों के आधार पर पंचायती राज व्यवस्था को लागू किया गया, जिससे ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद जैसी संस्थाओं का गठन हुआ। पंचायती राज व्यवस्था ने महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान किया और उन्हें नेतृत्व क्षमता विकसित करने का मंच दिया।¹² इस व्यवस्था ने लोकतंत्र को जमीनी स्तर तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में यह एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हुई है।

वर्ष 1992 में पारित 73वां और 74वां संविधान संशोधन भारतीय लोकतंत्र में एक ऐतिहासिक कदम था, जिसने पंचायती राज संस्थाओं और नगरीय निकायों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया। इन संशोधनों के माध्यम से स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए कम से कम एक-तिहाई सीटों का आरक्षण सुनिश्चित किया गया। इसका उद्देश्य महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाना और उन्हें निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना था। इन संशोधनों के परिणामस्वरूप लाखों महिलाएं पंचायतों और नगर निकायों में निर्वाचित होकर आईं, जिससे महिला प्रतिनिधित्व में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। यह संशोधन महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास था।¹³ इस आरक्षण ने महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाया और उन्हें सामाजिक एवं राजनीतिक पहचान प्रदान की।¹⁴

पंचायतों में महिला आरक्षण ने महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर प्रदान किया और उनके सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आरक्षण के कारण महिलाएं न केवल



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

निर्वाचित प्रतिनिधि बनीं, बल्कि उन्होंने विकास कार्यों में भी सक्रिय भूमिका निभाई। इससे महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर मिला और उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ। महिला आरक्षण ने ग्रामीण समाज में महिलाओं की पहचान और सम्मान को बढ़ाया तथा उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया।¹⁵ इसने महिलाओं को नेतृत्व क्षमता विकसित करने का अवसर प्रदान किया और उन्हें सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया।

पंचायतों में निर्वाचित महिलाओं ने शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पेयजल और महिला कल्याण से संबंधित मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया है। उन्होंने गांवों में विद्यालयों की स्थिति सुधारने, आंगनवाड़ी सेवाओं को मजबूत करने तथा महिला सुरक्षा के लिए विभिन्न प्रयास किए। महिला प्रतिनिधियों ने सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह और दहेज प्रथा के विरुद्ध भी जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिला प्रतिनिधित्व केवल औपचारिक नहीं है, बल्कि उन्होंने वास्तविक विकास कार्यों में सक्रिय योगदान दिया है।¹⁶

स्थानीय स्तर पर महिला प्रतिनिधियों ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने गांवों के विकास, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महिला सरपंचों और पार्षदों ने विकास योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित किया और ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के विकास में योगदान दिया। इससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति मजबूत हुई और समाज में उनके प्रति सम्मान बढ़ा। महिला प्रतिनिधित्व ने महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाया है।¹⁷

हालांकि पंचायतों में महिला प्रतिनिधित्व बढ़ा है, फिर भी उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई मामलों में महिलाएं केवल नाममात्र की प्रतिनिधि होती हैं और वास्तविक निर्णय उनके परिवार के पुरुष सदस्य लेते हैं, जिसे प्रॉक्सी प्रतिनिधित्व कहा जाता है। इसके अतिरिक्त, महिलाओं को शिक्षा की कमी, सामाजिक रूढ़िवादिता और आर्थिक निर्भरता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे उनकी प्रभावी भागीदारी प्रभावित होती है।¹⁸

राज्य स्तर की राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व

राज्य स्तर की राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम रहा है। यद्यपि महिलाओं को चुनाव लड़ने और प्रतिनिधित्व करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है, फिर भी विधानसभाओं में उनकी संख्या सीमित रही है। इसका मुख्य कारण सामाजिक बाधाएं, राजनीतिक दलों द्वारा कम अवसर प्रदान करना और संसाधनों की कमी है।¹⁹ महिला विधायकों ने राज्य स्तर पर शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा और सामाजिक कल्याण से संबंधित मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है। उन्होंने महिलाओं और बच्चों



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

के हितों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिला विधायकों की भागीदारी ने नीति निर्माण को अधिक संवेदनशील और समावेशी बनाया है।²⁰

राज्य स्तर पर महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें सामाजिक पूर्वाग्रह, राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और आर्थिक संसाधनों की कमी प्रमुख हैं। महिलाओं को अक्सर पुरुषों की तुलना में कम राजनीतिक समर्थन मिलता है, जिससे उनकी राजनीतिक प्रगति प्रभावित होती है।²¹ राज्य स्तर पर कई महिला नेताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने मुख्यमंत्री और मंत्री के रूप में कार्य करते हुए राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके नेतृत्व ने यह सिद्ध किया कि महिलाएं राज्य स्तर पर प्रभावी नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं और प्रशासनिक कार्यों को सफलतापूर्वक संचालित कर सकती हैं।²² इस प्रकार, स्थानीय और राज्य स्तर पर महिला प्रतिनिधित्व ने महिलाओं के सशक्तिकरण और लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, हालांकि अभी भी इस क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व

भारतीय संसद का निम्न सदन लोकसभा देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था है, जिसमें जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिनिधियों का चुनाव किया जाता है। भारतीय संविधान ने महिलाओं को पुरुषों के समान चुनाव लड़ने और प्रतिनिधित्व करने का अधिकार प्रदान किया, किंतु इसके बावजूद लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लंबे समय तक सीमित रहा। प्रथम लोकसभा में महिलाओं की संख्या अत्यंत कम थी, जो यह दर्शाती है कि सामाजिक संरचना और पितृसत्तात्मक मानसिकता ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित किया। समय के साथ शिक्षा, जागरूकता और महिला सशक्तिकरण के प्रयासों के कारण लोकसभा में महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है, किंतु यह अभी भी कुल प्रतिनिधित्व की तुलना में कम है। लोकसभा में महिला प्रतिनिधित्व का महत्व इस बात में निहित है कि यह महिलाओं की समस्याओं और आवश्यकताओं को राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है।²³ महिला सांसदों की उपस्थिति ने संसद में महिला सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।²⁴

राज्यसभा भारतीय संसद का उच्च सदन है, जिसमें राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व होता है। राज्यसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लोकसभा की तुलना में कुछ बेहतर रहा है, क्योंकि इसमें सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से होता है और राजनीतिक दलों को महिलाओं को प्रतिनिधित्व देने का अवसर मिलता है। इसके बावजूद, राज्यसभा में भी महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम रही है। महिला सदस्यों ने राज्यसभा में विभिन्न सामाजिक और आर्थिक मुद्दों को प्रभावी ढंग से



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

प्रस्तुत किया है और महिला अधिकारों से संबंधित कानूनों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिला प्रतिनिधित्व ने राज्यसभा की कार्यप्रणाली को अधिक समावेशी और संवेदनशील बनाया है।²⁵

महिला सांसदों की भूमिका केवल विधायी कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज के विभिन्न वर्गों की समस्याओं को संसद में प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। महिला सांसदों ने विशेष रूप से महिला सुरक्षा, घरेलू हिंसा, शिक्षा, स्वास्थ्य और बाल कल्याण जैसे मुद्दों पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने महिला अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न कानूनों के निर्माण और संशोधन में सक्रिय भूमिका निभाई है। महिला सांसदों की भागीदारी ने संसद को अधिक प्रतिनिधित्वकारी और लोकतांत्रिक बनाया है। इससे नीति निर्माण में महिलाओं के दृष्टिकोण को शामिल करने का अवसर मिला है, जिससे नीतियां अधिक प्रभावी और समावेशी बनी हैं।²⁶ महिला सांसदों की सक्रियता ने समाज में महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।²⁷

भारतीय राष्ट्रीय राजनीति में महिलाओं ने सर्वोच्च पदों पर आसीन होकर अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया है। इंदिरा गांधी भारत की पहली और अब तक की एकमात्र महिला प्रधानमंत्री रही हैं, जिन्होंने अपने कार्यकाल में महत्वपूर्ण राजनीतिक और आर्थिक निर्णय लिए। उनके नेतृत्व ने यह सिद्ध किया कि महिलाएं देश के सर्वोच्च पद पर प्रभावी नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, कई महिलाओं ने केंद्रीय मंत्री के रूप में कार्य करते हुए विभिन्न मंत्रालयों का सफलतापूर्वक संचालन किया है। महिला मंत्रियों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण नीतियां बनाई हैं और समाज के विकास में योगदान दिया है। इन महिला नेताओं के योगदान ने राष्ट्रीय राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व को मजबूत किया है और अन्य महिलाओं को राजनीति में आने के लिए प्रेरित किया है।²⁸

महिला आरक्षण और महिला प्रतिनिधित्व

महिला आरक्षण का तात्पर्य महिलाओं के लिए राजनीतिक संस्थाओं में निश्चित संख्या में सीटों को आरक्षित करने से है, ताकि उनकी राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समान अवसर प्रदान करना और उनके राजनीतिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे राजनीतिक क्षेत्र में पीछे रह गई थीं, इसलिए महिला आरक्षण को आवश्यक माना गया। महिला आरक्षण महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करता है।²⁹ महिला आरक्षण विधेयक भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है। इस विधेयक का उद्देश्य संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटों को आरक्षित करना था। इस विधेयक को पहली बार संसद में प्रस्तुत किया गया, किंतु विभिन्न राजनीतिक कारणों से



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

इसे लंबे समय तक पारित नहीं किया जा सका। इसके बावजूद, यह मुद्दा लगातार चर्चा का विषय बना रहा और महिला संगठनों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इसके समर्थन में आवाज उठाई। महिला आरक्षण विधेयक ने महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई और महिला प्रतिनिधित्व के महत्व को उजागर किया।³⁰

महिला आरक्षण का महत्व इस बात में निहित है कि यह महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर प्रदान करता है और उनकी भागीदारी को बढ़ाता है। इससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति मजबूत होती है और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने का अवसर मिलता है। महिला आरक्षण लोकतंत्र को अधिक प्रतिनिधित्वकारी और समावेशी बनाता है। यह महिलाओं को नेतृत्व क्षमता विकसित करने का अवसर प्रदान करता है और समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।³¹ महिला आरक्षण का महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पंचायतों में महिला आरक्षण लागू होने के बाद बड़ी संख्या में महिलाएं राजनीतिक प्रक्रिया से जुड़ीं और उन्होंने विकास कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा और उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ। महिला आरक्षण ने महिलाओं को राजनीतिक नेतृत्व के लिए तैयार किया और उन्हें राष्ट्रीय राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इससे लोकतंत्र को मजबूत करने और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में सहायता मिली।³² इस प्रकार, राष्ट्रीय राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व और महिला आरक्षण दोनों ही महिलाओं के सशक्तिकरण और लोकतंत्र के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

महिला प्रतिनिधित्व के सामने चुनौतियां

भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक संरचना महिला प्रतिनिधित्व के मार्ग में सबसे बड़ी सामाजिक बाधा है। पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार महिलाओं की भूमिका को घरेलू कार्यों तक सीमित माना जाता है, जिसके कारण उन्हें सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता। समाज में यह धारणा प्रचलित रही है कि राजनीति पुरुषों का क्षेत्र है और महिलाएं इसके लिए उपयुक्त नहीं हैं। इस मानसिकता के कारण महिलाओं को चुनाव लड़ने, नेतृत्व करने और स्वतंत्र निर्णय लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक रूढ़िवादिता, लैंगिक भेदभाव और महिलाओं के प्रति असमान दृष्टिकोण भी उनके राजनीतिक विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।

महिला प्रतिनिधित्व में आर्थिक बाधाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। चुनाव लड़ने और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है, किंतु अधिकांश महिलाएं आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर रहती हैं। इस आर्थिक निर्भरता के कारण वे



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले पाती हैं। इसके अतिरिक्त, महिलाओं को राजनीतिक दलों और अन्य संस्थाओं से पर्याप्त आर्थिक सहयोग नहीं मिलता, जिससे उनकी राजनीतिक भागीदारी प्रभावित होती है। आर्थिक संसाधनों की कमी महिलाओं के आत्मविश्वास और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित करती है। राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं को कई प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। राजनीतिक दल अक्सर महिलाओं को चुनाव लड़ने के लिए कम अवसर प्रदान करते हैं और उन्हें महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त करने में संकोच करते हैं। इसके अतिरिक्त, राजनीति में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, भ्रष्टाचार और अपराधीकरण भी महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करते हैं। कई बार महिलाओं को राजनीतिक समर्थन और संरक्षण की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनके लिए राजनीति में टिके रहना कठिन हो जाता है।

पारिवारिक जिम्मेदारियां भी महिला प्रतिनिधित्व में एक महत्वपूर्ण बाधा हैं। महिलाओं को घर, बच्चों और परिवार की देखभाल की जिम्मेदारी निभानी होती है, जिससे उन्हें राजनीतिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। इसके अतिरिक्त, कई परिवार महिलाओं के राजनीति में प्रवेश का विरोध करते हैं, जिससे उनकी राजनीतिक प्रगति प्रभावित होती है। पारिवारिक समर्थन की कमी महिलाओं के आत्मविश्वास और राजनीतिक विकास को सीमित कर देती है। शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता की कमी भी महिला प्रतिनिधित्व में एक महत्वपूर्ण बाधा है। शिक्षा महिलाओं को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है, किंतु शिक्षा के अभाव में महिलाएं राजनीतिक प्रक्रिया को पूरी तरह समझ नहीं पाती हैं। इससे उनकी राजनीतिक भागीदारी सीमित हो जाती है और वे प्रभावी नेतृत्व प्रदान करने में कठिनाई अनुभव करती हैं।

महिला प्रतिनिधित्व का प्रभाव

महिला प्रतिनिधित्व लोकतंत्र को मजबूत और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ती है, तो लोकतंत्र अधिक प्रतिनिधित्वकारी और समावेशी बनता है। इससे शासन प्रणाली में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और संवेदनशीलता बढ़ती है। महिला प्रतिनिधित्व लोकतंत्र के मूल सिद्धांत समानता को साकार करने में सहायक होता है।³³ महिला प्रतिनिधित्व सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महिला प्रतिनिधि शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला कल्याण और सामाजिक न्याय से संबंधित मुद्दों पर विशेष ध्यान देती हैं। इससे समाज के कमजोर वर्गों के विकास में सहायता मिलती है और सामाजिक असमानता को कम करने में मदद मिलती है।³⁴ महिला प्रतिनिधित्व महिलाओं के सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम है। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और समाज में अपनी स्थिति को मजबूत बनाती हैं।³⁵



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

महिला प्रतिनिधित्व नीति निर्माण को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाता है। महिला प्रतिनिधि समाज के विभिन्न वर्गों की समस्याओं को बेहतर तरीके से समझती हैं और उनके समाधान के लिए उचित नीतियां बनाने में योगदान देती हैं। इससे नीति निर्माण अधिक व्यावहारिक और जनहितकारी बनता है।³⁶

महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने के उपाय

महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए महिला शिक्षा को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा महिलाओं को जागरूक बनाती है और उन्हें राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षित महिलाएं अपने अधिकारों को बेहतर तरीके से समझती हैं और प्रभावी नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम होती हैं।³⁷ महिलाओं को राजनीतिक प्रशिक्षण प्रदान करना भी आवश्यक है, जिससे वे राजनीतिक प्रक्रिया को समझ सकें और प्रभावी नेतृत्व प्रदान कर सकें। प्रशिक्षण कार्यक्रम महिलाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करते हैं और उन्हें राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं।³⁸ महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए महिला आरक्षण का प्रभावी कार्यान्वयन आवश्यक है। इससे महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर मिलता है और उनकी भागीदारी बढ़ती है।³⁹ समाज में महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है। सामाजिक जागरूकता से महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन मिलता है और उनके प्रति भेदभाव कम होता है।⁴⁰ राजनीतिक दलों की भूमिका महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि राजनीतिक दल महिलाओं को अधिक अवसर प्रदान करें और उन्हें नेतृत्व पदों पर नियुक्त करें, तो महिला प्रतिनिधित्व में वृद्धि हो सकती है। राजनीतिक दल महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।⁴¹ इस प्रकार, महिला प्रतिनिधित्व की चुनौतियों को दूर करके और उचित उपाय अपनाकर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाया जा सकता है, जिससे लोकतंत्र और समाज दोनों मजबूत होंगे।

निष्कर्ष

इस शोध शोध-पत्र से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोकतंत्र में महिला प्रतिनिधित्व का विकास एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक महिलाओं की भागीदारी में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है। स्वतंत्रता आंदोलन ने महिलाओं में राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने का कार्य किया, जबकि स्वतंत्रता के बाद संविधान द्वारा प्रदान किए गए समान अधिकारों ने उनके राजनीतिक प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया। विशेष रूप से 73वें और 74वें संविधान संशोधन ने स्थानीय शासन में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाकर महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण आधार तैयार किया। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं ने न केवल राजनीतिक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, बल्कि सामाजिक और विकासात्मक कार्यों में भी प्रभावी भूमिका निभाई।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

इसके बावजूद, राष्ट्रीय और राज्य स्तर की राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व अभी भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच पाया है। सामाजिक रूढ़िवादिता, आर्थिक निर्भरता, शिक्षा की कमी, पारिवारिक जिम्मेदारियां तथा राजनीतिक अवसरों की सीमित उपलब्धता जैसी अनेक बाधाएं महिलाओं की राजनीतिक प्रगति में अवरोध उत्पन्न करती हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, महिला प्रतिनिधियों ने नीति निर्माण, सामाजिक विकास तथा महिला अधिकारों की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे लोकतंत्र अधिक समावेशी और संवेदनशील बना है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि महिला प्रतिनिधित्व केवल राजनीतिक भागीदारी का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और लोकतंत्र की मजबूती से जुड़ा हुआ विषय है। महिला शिक्षा, राजनीतिक प्रशिक्षण, सामाजिक जागरूकता तथा आरक्षण नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से महिला प्रतिनिधित्व को और अधिक मजबूत किया जा सकता है। जब महिलाओं की समान और प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित होगी, तभी भारतीय लोकतंत्र वास्तविक रूप से पूर्ण और सशक्त बन सकेगा।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, एस. पी., भारतीय समाज, जयपुर, पंचशील प्रकाशन, 2009, पृ. 215
2. शर्मा, आर. सी., भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2012, पृ. 132
3. कौशिक, सुशीला, महिला और राजनीति, नई दिल्ली, हर-आनंद प्रकाशन, 1993, पृ. 89
4. जैन, एम. पी., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 254
5. कुमार, संजय, भारतीय लोकतंत्र और महिला भागीदारी, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015, पृ. 178
6. सिंह, योगेंद्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2008, पृ. 301
7. शर्मा, आर. सी., भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2012, पृ. 85
8. कौशिक, सुशीला, महिला और राजनीति, नई दिल्ली, हर-आनंद प्रकाशन, 1993, पृ. 102



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

9. जैन, एम. पी., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 312
10. सिंह, योगेंद्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2008, पृ. 287
11. कुमार, संजय, भारतीय लोकतंत्र और महिला भागीदारी, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015, पृ. 156
12. सिंह, योगेंद्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2008, पृ. 312
13. जैन, एम. पी., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 356
14. कौशिक, सुशीला, महिला और राजनीति, नई दिल्ली, हर-आनंद प्रकाशन, 1993, पृ. 145
15. शर्मा, आर. सी., भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2012, पृ. 201
16. कुमार, संजय, भारतीय लोकतंत्र और महिला भागीदारी, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015, पृ. 198
17. अग्रवाल, एस. पी., भारतीय समाज, जयपुर, पंचशील प्रकाशन, 2009, पृ. 276
18. कौशिक, सुशीला, महिला और राजनीति, नई दिल्ली, हर-आनंद प्रकाशन, 1993, पृ. 167
19. जैन, एम. पी., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 378
20. कुमार, संजय, भारतीय लोकतंत्र और महिला भागीदारी, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015, पृ. 214
21. शर्मा, आर. सी., भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2012, पृ. 245
22. सिंह, योगेंद्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2008, पृ. 329



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

23. जैन, एम. पी., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 412
24. कुमार, संजय, भारतीय लोकतंत्र और महिला भागीदारी, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015, पृ. 256
25. शर्मा, आर. सी., भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2012, पृ. 278
26. कौशिक, सुशीला, महिला और राजनीति, नई दिल्ली, हर-आनंद प्रकाशन, 1993, पृ. 198
27. सिंह, योगेंद्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2008, पृ. 354
28. जैन, एम. पी., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 436
29. कौशिक, सुशीला, महिला और राजनीति, नई दिल्ली, हर-आनंद प्रकाशन, 1993, पृ. 223
30. शर्मा, आर. सी., भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2012, पृ. 301
31. कुमार, संजय, भारतीय लोकतंत्र और महिला भागीदारी, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015, पृ. 289
32. सिंह, योगेंद्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2008, पृ. 372
33. जैन, एम. पी., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 472
34. सिंह, योगेंद्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2008, पृ. 418
35. कुमार, संजय, भारतीय लोकतंत्र और महिला भागीदारी, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015, पृ. 334
36. कौशिक, सुशीला, महिला और राजनीति, नई दिल्ली, हर-आनंद प्रकाशन, 1993, पृ. 289



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

37. सिंह, योगेंद्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2008, पृ. 436
38. शर्मा, आर. सी., भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2012, पृ. 365
39. जैन, एम. पी., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 489
40. कौशिक, सुशीला, महिला और राजनीति, नई दिल्ली, हर-आनंद प्रकाशन, 1993, पृ. 301
41. कुमार, संजय, भारतीय लोकतंत्र और महिला भागीदारी, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015, पृ. 352